



जुलाई 2019

वर्ष : 2 अंक :10

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



संस्थान की जुलाई मास की हिंदी पत्रिका 'सिफरी मासिक समाचार' आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। इस माह 14 एवं 15 जून 2019 को बिहार के पूर्वी चम्पारण जिले के मोतिहारी अवस्थित कररिया एवं सिरसा मन में आयोजित फिश हार्वेस्ट मेला का उद्घाटन माननीय पूर्व कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी के कर कमलों द्वारा किया गया। श्री सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि संस्थान द्वारा किए गए वैज्ञानिक प्रयोगों के माध्यम से पूर्वी

चंपारण जिले के पांच मौन के 1000 मछुआरों के परिवारों की आय दोगुनी हो गयी है। उन्होंने इस प्रयास के लिए संस्थान के वैज्ञानिकों की भूरी भूरी प्रशंसा की। संस्थान ने इस महीने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की क्षेत्रीय समिति - II की मध्यावधि समीक्षा बैठक का आयोजन संस्थान में सफलता पूर्वक किया, जिसकी अध्यक्षता डॉ जय कृष्ण जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने की। बैठक में इस क्षेत्रीय समिति की 23 वीं और 24 वीं बैठकों में की गई कार्यवाहियों और सिफारिशों की प्रगति पर चर्चा की गई। संस्थान ने 20 और 21 जून 2019 को 5 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया। भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराए गए सामान्य योग प्रोटोकॉल के आधार पर प्रख्यात योग विशेषज्ञ सुश्री जयश्री मारजीत के मार्गदर्शन में योग सत्र आयोजित किया जिसमें 150 कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्यों ने भाग लिया। एक दशक के अन्तराल के बाद इस वर्ष नई दिल्ली में राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के 26वीं वार्षिक सामान्य सभा में संस्थान के वैज्ञानिक को NAAS फेलोशिप, 2019 से सम्मानित किया। इस अवधि में संस्थान ने अनुसंधान कार्यों के अलावा कृषकों, अधिकारियों एवं छात्रों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, इसके साथ साथ जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल एवं केरल में किया गया ताकि मत्स्य विज्ञान की नई जानकारी, तकनीक, गतिविधियों से किसानों अधिकारियों एवं छात्रों को अवगत कराया जा सके। इस अंक के साथ हम आपके समक्ष संस्थान के कार्य प्रगति को प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है यह अंक आपको पसंद आएगा।

आप सभी को धन्यवाद।



बिक्रम

मुख्य शोध उपलब्धियां

- कावेरी नदी के निचले और मध्य भाग के सर्वेक्षण में 28 देशी और 4 विदेशी प्रजातियों की उपस्थिति क्रमशः 54% और 46% पाई गई है। विदेशी प्रजातियों में *ओरियोक्रोमिस नाईलोटिकस* की प्रचुरता सबसे अधिक है और इसके बाद *क्लारियस गोरिपिनस* की उपस्थिति दर्ज की गयी है।
- केंद्रीय योजना - नीली क्रांति (सेन्ट्रल सेक्टर स्कीम - ब्लू रिवलुशन) के अंतर्गत बिहार के चार मन (आद्रभूमि) में विकास प्रबंधन के तहत क्षेत्र पालन आधारित मातस्यिकी के माध्यम से प्रबंधन द्वारा चार मन की मत्स्य उपज में दो से तीन गुना वृद्धि दर्ज की गयी। कररिया मन की उपज 180 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष से बढ़कर लगभग 675 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष; सिरसा मन में 190 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष से 320 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष; रूही मन में 70 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष से 140 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष और मझरिया मन में 60 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष से 120 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष हो गई है।
- उर्मल, चटला, मोरकोलांग और चारण आर्द्रक्षेत्र में कार्बन बजट पद्धति के अध्ययन के आधार पर उर्मल (24.35 पीपीएम) में सबसे अधिक घुलित जैविक कार्बन (डीओसी) उसके बाद चतला (18.11 पीपीएम), मोरकोलांग (3.84) पीपीएम और चारण (3.18 पीपीएम) में पाया गया है। जबकि घुलित अजैविक कार्बन (डीआईसी) चटला में 26.84 पीपीएम, उर्मल में 24.35 पीपीएम, चारण में 5.89 पीपीएम और मोरकोलांग में 5.50 पीपीएम पाई गई है। चारण और मोरकोलॉग आर्द्रक्षेत्रों में मछली का प्राथमिक उत्पादन अन्य दो आर्द्रक्षेत्रों से अधिक पाया गया है।
- पश्चिम बंगाल में निचले गंगा बेसिन के कुछ चयनित आर्द्र क्षेत्रों के प्लवकों के मौसमी गतिशीलता अध्ययन से पता चला है कि अत्यधिक मानसून अवधि (जुलाई-अगस्त) में मध्यम प्लवक (आकार रेंज- 200-2000 माइक्रोन) सबसे अधिक (> 50%) पाया गया। मध्यम प्लवक वर्ग में लगभग 60% उपस्थिति के साथ रोटिफर सबसे ज्यादा पाए जाने वाले समुदाय दर्ज किए गए।
- पुंटीयस सोफ़ोर* के गोनाडल इंटीग्रीटी से युक्त जीन एक्सप्रेसन में ऊष्मा तनाव-प्रेरित परिवर्तन अध्ययन से पता चलता है कि तापमान वृद्धि से इस मछली की प्रजनन क्षमता और स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है।
- तेलंगाना जलाशयों में पिंजरे में मत्स्य पालन प्रदर्शन के तहत, *पंगेशियनोडोन हाइपोफथाल्मस* (29 पिंजरे@30 नग/मी³) और *मैक्रोब्रैकियम रोसेनबर्गि* (4 पिंजरे@6 नग/मी³) को सीआईएफआरआई जीआई मॉडल पिंजरों (5मीx5मीx4मी) रखा गया। 8 महीने और 6 महीने में इनका औसत वजन

क्रमशः 700 ग्राम (प्रारंभिक: 3.3 ग्राम) और 33 ग्राम (प्रारंभिक: 4.9 ग्राम) पाया गया।

"केशपुरा-पिकासीडा" के मछुआरों के लिए आद्रभूमिमें सुधार और पालन आधारित मात्स्यिकी पर जागरूकता कार्यक्रम

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने सुबरनरेखा नदी के कटाव से बनी झील (झील) "केशपुरा-पिकासीडा" को पुनर्जीवित करने के लिए ओडिशा के जलेश्वर, बालासोर, स्थित केशपुरा गाँव में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इसका उद्देश्य पालन आधारित मात्स्यिकी के द्वारा



मछुआरों की आजीविका में वृद्धि और मत्स्य संरक्षण करना था। जलेश्वर के केशपुरा और पिकासीदा गाँव में 500 से अधिक परिवार मत्स्य प्रगहन पर आश्रित हैं। इस झील का कुल क्षेत्रफल 144 एकड़ है और जलीय खरपतवारों से पटा पड़ा है। चालीस साल पूर्व यह झील जनजातीय समुदाय से संबंधित सारे ग्रामीणों के आजीविका की रीढ़ हुआ करती थी। वर्तमान में, गाँव के अधिकांश लोगो का प्राथमिक व्यवसाय मछली पकड़ना है। संस्थान इन मछुआरों के मत्स्य पालन विभाग, ओडीशा सरकार और पीएफसीएफ के माध्यम से सामुदायिक भागीदारी द्वारा इस झील में मत्स्य पालन हेतु जागरूकता पैदा करने के



लिए जागरूक बनाने का काम कर रही है। केशपुरा गाँव में जन जागरूकता कार्यक्रम में लगभग 300 ग्रामीणों ने भाग लिया। ग्रामीणों

ने संस्थान के निदेशक, के साथ बातचीत की और झील (बील) में मत्स्य विकास के लिए एक रोड मैप तैयार किया। डॉ. दास ने ग्रामीणों को जानकारी दी कि, हमारा संस्थान ने कई राज्यों (पश्चिम बंगाल, असम, उत्तर प्रदेश और बिहार) में आद्रभूमि प्रबंधन पर काम किया है। डॉ. दास ने आद्रक्षेत्र में, घेरा में मत्स्य बीज के पालन पर भी जोर दिया है, जिससे मत्स्य बीज की लागत को कम किया जा सके। श्री दीक्षित,



सह-निरीक्षक, बालासोर, मत्स्य विभाग, ओड़ीशा सरकार, भी इस बैठक में मौजूद थे। इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ.पी.के.परिदा द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम के स्थानीय प्रबंधन "त्रिनाथ पीएफसीएस" "केशपुरा-पिकासीदा" के अध्यक्ष श्री अतुल दास, एवं पी. सी. नायक, सचिव द्वारा किया गया।

संस्थान में भा.कृ.अनु.प. क्षेत्रीय समिति II की मध्यावधि समीक्षा बैठक का आयोजन



भा.कृ.अनु.प. की क्षेत्रीय समिति- II (पश्चिम बंगाल, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह) की मध्यावधि समीक्षा बैठक का आयोजन संस्थान में 12 अप्रैल 2019 को किया गया। बैठक में इस क्षेत्रीय समिति की 23 वीं और 24 वीं बैठकों में की गई कार्यवाहियों और सिफारिशों की प्रगति पर चर्चा की गई। भा.कृ.अनु.प. संस्थानों, राज्य कृषि विश्वविद्यालय और राज्य कृषि/पशुपालन / बागवानी / मछली पालन विभागों के लगभग 60 प्रतिभागियों ने, जिनमें बिधान चंद्र कृषि विश्व विद्यालय के कुलपति, आचार्य एन. जी. रंगा कृषि विश्व विद्यालय और भा.कृ.अनु.प. संस्थानों के सात निदेशक और भा.कृ.अनु.प.के सहायक महानिदेशक, राज्यों / केंद्रशासित प्रदेशों के विभागों के अधिकारीगण इस समीक्षा में शामिल

थे।

डॉ. बि.के.दास, संस्थान के निदेशक और सदस्य सचिव ने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया और इस क्षेत्र में आने वाले राज्यों के बारे में अवगत करवाया। उन्होंने बताया कि इस क्षेत्र के राज्य चावल, आलू, तम्बाकू, जूट, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, तेल-ताड़, सब्जियों और फूलों जैसी कई फसलों के प्रमुख उत्पादक हैं। डॉ. जयकृष्ण जेना, उप महा निदेशक (मत्स्य विज्ञान), ने बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने जोर देकर कहा कि यह बैठक नवीन प्रौद्योगिकी और उपकरणों के माध्यम से कृषि समस्याओं को हल करने के लिए विभिन्न राज्यों तक पहुंचने के लिए एक उत्कृष्ट मंच है। उन्होंने इस क्षेत्र के महत्व और देश के खाद्य अनाज उत्पादन और पशु और



मत्स्य संसाधन में इसके योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रभावी प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए केंद्र-राज्य समन्वयन के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि किसानों की आय दोगुनी करने के सपने को पूरा करने के लिए, पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन के एकीकरण के साथ कृषि प्रणाली को योजनाबद्ध तरीके से लागू किया जाना चाहिए। इस बैठक में 23 वीं बैठक की रिपोर्टों की समीक्षा की गई। इसके बाद 24 वीं बैठक की रिपोर्ट की कार्यवाही की प्रगति का आकलन किया गया। चर्चा के दौरान, अध्यक्ष ने छोटे खेतों और महिला किसानों के लिए उपयुक्त कृषि उपकरणों को बढ़ावा देने; उपयुक्त संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों का विकास; चावल, दलहन और तिलहन; बागवानी फसलों में कटाई के बाद के नुकसान को कम करना; उच्च घनत्व में वृक्षारोपण और शहरी बागवानी; डेयरी



उद्यमशीलता; देशी पशु नस्लों का संरक्षण; कुशल विपणन प्रणाली, आदि की आवश्यकताओं पर जोर दिया। अंत में उन्होंने इस क्षेत्र के भा.कृ.अनु.प. संस्थानों के सभी निदेशकों और राज्य अधिकारियों से मध्यावधि बैठक में भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया।

बिहार के पूर्वी चम्पारण जिले में दो दिवसीय "फिश हार्वेस्ट मेला" का आयोजन



संस्थान ने बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में 14 से 15 जून, 2019 के दौरान कररिया और सिरसा मौन पर दो दिवसीय "फिश हार्वेस्ट मेला" का आयोजन किया। इस मेले का उद्घाटन माननीय पूर्व केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री और संसद सदस्य (लोक सभा) पूर्वी चंपारण श्री राधा मोहन सिंह ने किया। श्री सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि संस्थान द्वारा किए गए वैज्ञानिक प्रयोगों के माध्यम से एनएफडीबी वित्त पोषित इस कार्यक्रम ने पूर्वी चंपारण जिले के पांच



एक हजार परिवारों को रोजगार मिलाने से आर्थिक स्थिति मजबूत, सांसद ने किया मेले का उद्घाटन

मनों में बढ़ा मछली उत्पादन: राधामोहन

मौजिली | बिहार समाचार

मछली के मन-मन-मनों को अजब-दुर्लभ करने के लिए मैंने मछली उत्पादन का काम शुरू कर दिया है। मैंने दो साल के बाद करीब करीब, कररिया, सिरसा, मोतीबाग व आदिवासी इलाकों के किसान-किसानों को मछली उत्पादन की जानकारी देने के लिए 'फिश हार्वेस्ट मेला' का आयोजन किया है। यह कार्यक्रम कररिया और सिरसा मौन पर आयोजित किया जा रहा है।

किया मेले का उद्घाटन

- मछली उत्पादन के लिए मछली उत्पादन करने वाले किसानों को जानकारी देने के उद्देश्य से किया गया मेला
- पूरे चंपारण जिले में किया जा रहा है
- इस कार्यक्रम के माध्यम से किसानों को मछली उत्पादन के बारे में जानकारी दी जा रही है

दरभंगाह युवा हूप सकारासित

युवाओं को मछली उत्पादन के बारे में जानकारी देने के लिए 'फिश हार्वेस्ट मेला' का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम कररिया और सिरसा मौन पर आयोजित किया जा रहा है।

युवा, किसान व आधी आबादी सर्वोच्च प्राथमिकता

चौले सासर

- कररिया जिले के लिए मछली उत्पादन करने वाले किसानों को जानकारी देने के उद्देश्य से किया गया मेला
- पूरे चंपारण जिले में किया जा रहा है
- इस कार्यक्रम के माध्यम से किसानों को मछली उत्पादन के बारे में जानकारी दी जा रही है

अर्जुन चटुर्द्वी मेले पर महोदय कररिया पर विचार

अर्जुन चटुर्द्वी मेले पर महोदय कररिया पर विचार करने के लिए मैंने मछली उत्पादन का काम शुरू कर दिया है। मैंने दो साल के बाद करीब करीब, कररिया, सिरसा, मोतीबाग व आदिवासी इलाकों के किसान-किसानों को मछली उत्पादन की जानकारी देने के लिए 'फिश हार्वेस्ट मेला' का आयोजन किया है। यह कार्यक्रम कररिया और सिरसा मौन पर आयोजित किया जा रहा है।

मौन के 1000 मछुआरों के परिवारों को अपनी आय दोगुनी करने में सहायता की है।

डॉ. बि.के.दास, निदेशक, ने अपने स्वागत भाषण में संस्थान द्वारा पालन आधारित मात्स्यिकी में तकनीकी प्रयोग के बारे में जानकारी दी। उन्होंने जोर देकर कहा कि संस्थान द्वारा चलाये जा रहे परियोजनाओ के कारन मत्स्य उपज को दुगुनी-तिगुनी करने में संस्थान को सफलता प्राप्त हुई। इससे कररिया मौन में 3.75 गुना (180 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष से लेकर लगभग 675 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष); सिरसा मौन में 1.68 गुना (190 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष से 320 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष) और रूहली एवं



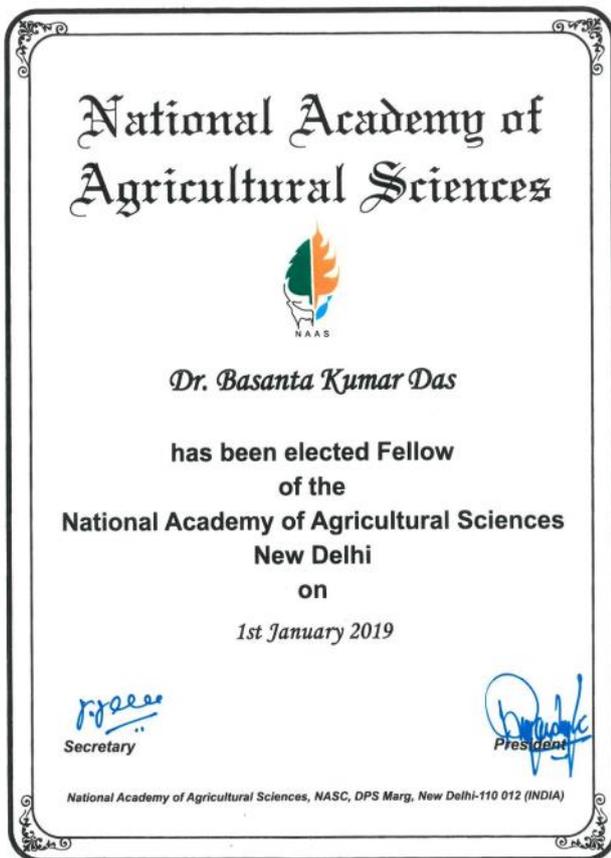
माझारिया मौन में दो गुना (70 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष से 140 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष मौन में 60 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष से 120 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष क्रमशः) उपज हो गयी। इसके अतिरिक्त, मछुआरो को भी मत्स्य प्रगहन कार्य दिवस वृद्धि कररिया मौन में 44 दिन से 151 दिन; सिरसा मौन में 32 दिन से 63 दिन; रूली मौन में 35 दिन से 62 दिन और मजहरिया मौन में 28 दिन से 60 दिन होने से लाभ हुआ है।



नीली क्रांति, केंद्रीय योजना(सेन्ट्रल सेक्टर स्कीम- ब्लू रिवल्यूशन) के तहत बिहार की आद्रभूमि मत्स्य विकास परियोजनाओं से बिहार की आद्रभूमियों को संस्थान द्वारा विकसित तकनीको के हस्तक्षेप से मछली उत्पादन में सफलतापूर्वक देखी जा सकती है। स्थानीय मछुआरों ने यह भी माना कि इस तरह की योजनाएं न केवल बेरोजगारी को कम करने में सक्षम है, बल्कि नौकरियों की तलाश में युवाओं के शहरों की तरफ जाने की प्रवृत्ति को उलटने में भी सक्षम है। इस कार्यक्रम में 250 से अधिक मछुआरों ने भाग लिया। डॉ. राजू बैठा, वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।



संस्थान के निदेशक बसन्त कुमार दास राष्ट्रीय कृषि वैज्ञानिक अकादमी की फेलोशिप से सम्मानित



1990 में स्थापित राष्ट्रीय कृषि वैज्ञानिक अकादमी, भारत की सभी विज्ञान अकादमियों में सबसे नयी है। अकादमी फसल विज्ञान, पशुपालन, मत्स्य पालन, कृषि वानिकी और कृषि और कृषि-उद्योग के बीच इंटरफेस सहित कृषि विज्ञान के व्यापक क्षेत्र पर केंद्रित है। अकादमी की भूमिका कृषि वैज्ञानिकों को एक मंच प्रदान करना है, जो कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार-विमर्श करने और विभिन्न स्तरों पर योजनाकारों, निर्णय / राय निर्माताओं के लिए नीतिगत इनपुट के रूप में वैज्ञानिक समुदाय के विचारों को प्रस्तुत करता है। इसे प्राप्त करने के लिए, अकादमी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस, सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और कृषि विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार-मंथन सत्रों का आयोजन और समर्थन करती है। अकादमी विभिन्न स्तरों पर वैज्ञानिकों को मान्यता प्रदान करती है, और कृषि विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अत्याधुनिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करती है। इस के अन्तर्गत मत्स्य विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान के लिए वर्ष 2019 ने लिए संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास को राष्ट्रीय कृषि वैज्ञानिक अकादमी के फेलोशिप से सम्मानित किया गया। अब तक ये सम्मान देश के के केवल 34 मत्स्य वैज्ञानिकों को ही प्राप्त हुआ है। डॉ. दास इस संस्थान के तीसरे वैज्ञानिक है जिनको यह सम्मान प्राप्त हुआ है इसके पूर्व यहाँ सम्मान डॉ. वी. आर. पी. सिन्हा एव. डॉ. कुलदीप कुमार वास को प्राप्त हुआ था।

संस्थान में 5 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन



योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है; मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है; विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला है तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को भी प्रदान करने वाला है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के अनुसार आसन और प्राणायाम का संयोजन मानसिक लक्षणों और अवसाद को कम करता है, विचार प्रक्रिया और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करता है और सकारात्मक न्यूरोबायोलॉजिकल परिवर्तन पैदा करता है (बैंगलोर के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंसेज के एक शोध के अनुसार)।

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया जाता है। यह दिन

वर्ष का सबसे लम्बा दिन होता है और योग भी मनुष्य को दीर्घ जीवन प्रदान करता है। पहली बार यह दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया, जिसकी पहल भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण से की थी जिसके बाद 21 जून को "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" घोषित किया गया। 11 दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र में 177 सदस्यों द्वारा 21 जून को "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" को मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिली। इसके पश्चात पूरे विश्व में योग मनाया जाने लगा। 21 जून, 2015 से प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस संस्थान में मान्य जाता है। इसी श्रृंखला में संस्थान ने 20 और 21 जून 2019 को 5 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया। डॉ.बि.



के. दास, संस्थान के निदेशक ने अपने उद्घाटन भाषण में अनुरोध किया की सभी कर्मचारी प्रतिदिन योगाभ्यास करने की आदत डालें। इस अवसर पर, भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराए गए सामान्य योग प्रोटोकॉल के आधार पर बैरकपुर की योग केंद्र की प्रख्यात योग विशेषज्ञ सुश्री जयश्री मारजीत और उनकी टीम के मार्गदर्शन में योग सत्र आयोजित किया गया। संस्थान के कृष्ण उद्यान में 21 जून 2019 को लगभग 150 अधिकारियों /कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

इससे पहले, 20 जून, 2019 को संस्थान के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्यों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य लाभों के लिए "योग से स्वास्थ्य लाभ" पर एक व्याख्यान सत्र भी आयोजित किया गया था। प्रतिभागियों ने विशिष्ट स्वास्थ्य संबंधी लाभों के लिए विशिष्ट योग पर प्रश्न पूछकर अपनी शंकाओं को स्पष्ट किया। क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी, इलाहाबाद, बैंगलोर और वडोदरा ने भी इस अवसर पर योग दिवस मनाया।



ओडिशा में विनाशकारी चक्रवात फनी के प्रभाव का अध्ययन किया

बंगाल की खाड़ी में बेहद भयंकर चक्रवाती तूफान फनी 3 मई 2019 को ओडिशा तट पर पुरी जिले में लगभग 200 किमी प्रति घंटे की हवा की गति के साथ आया, जिसके परिणामस्वरूप 4 जिलों (पुरी, कटक, केंद्रपाड़ा और जगतसिंहपुर) में काफी नुकसान हुआ। ओडिशा के प्रभावित इलाकों में मत्स्य क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करते हुए, नुकसान का आकलन करने के लिए संस्थान के वैज्ञानिकों के एक दल को भेजा गया। दल में विभिन्न विषयों के वैज्ञानिक जिनमें जलकृषि, मत्स्य संसाधन प्रबंधन, कृषि रसायन, कृषि अर्थशास्त्र और कृषि विस्तार शामिल आदि शामिल थे। इस तूफान से क्षेत्र विशेष में हुए नुकसान का आकलन 5 से 11 जून 2019 के दौरान किया गया।



क्षेत्र मूल्यांकन शुरू करने से पहले, चिलिका विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, ओडिशा राज्य में कार्यरत वर्ल्ड फिश सेंटर के विशेषज्ञ, मत्स्य निदेशालय के संयुक्त निदेशक (समुद्री) सहित राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श और बैठकें की गईं। अंतर्स्थलीय जल में फनी के प्रभाव को समझने के लिए मूल्यांकन में सभी जैविक और अजैविक मापदंडों का आकलन किया गया।

प्रांभिक विश्लेषण में मछली पकड़ने में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया था। यह भी दर्ज किया गया है कि चिलिका लैगून और नदियों जैसे महानदी, कथाजोड़ी-देवी के जल गुणवत्ता पहलू अपनी सामान्य स्थिति तक पहुंच चुके हैं और उत्पादन प्रक्रिया में योगदान करने के लिए सामान्य रूप से सहायक हैं। मत्स्य प्रग्रहण और कैच प्रति यूनिट प्रयास आदि में कोई बड़ी असामान्यता नहीं देखी गयी। टीम ने जगतसिंहपुर जिले के महानदी मुहाना के लगभग 15 मछुआरों के गाँव और पुरी जिले में चिलिका लगून और पुरी के विभिन्न क्षेत्रों का भी दौरा किया। टीम ने दर्ज किया कि पुरी जिले में कच्चे घरों, मछली पकड़ने वाली नौकाओं, जालों, घरेलू सामानों में व्यापक और गंभीर नुकसान हुआ है। चिलिका के बाहरी चैनल के सतपदा क्षेत्र में मछली पकड़ने वाली नौकाओं और जालों को करीब 90% तक नुकसान पहुंचा है। कच्चे घर लगभग पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए थे और अर्ध-पक्के घरों



ने तूफान के बाद आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त पाए गए। घरेलू सामान और संग्रहित कृषि उत्पाद भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। सबसे ज्यादा

प्रभावित क्षेत्रों में शहरवासियों को अभी भी भोजन, साफ पानी और बिजली जैसी बुनियादी जरूरतों के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। मत्स्य पालन के अलावा, कृषि, बागवानी फसलों जैसे आम, काजू और नारियल की रोपण फसलें भी क्षतिग्रस्त हुई हैं। चक्रवात ने तटीय क्षेत्रों में कृषि भूमि को भी नुकसान पहुंचाया है। राज्य सरकारों के प्रारंभिक आकलन के अनुसार, चक्रवात के कारण ओडिशा में 30% से अधिक फसल खराब हो गई है। राज्य के 14 जिलों में 1,00,000 हेक्टेयर से अधिक कृषि भूमि बुरी तरह प्रभावित हुई है। विशेष रूप से पुरी जिले में नुकसान विस्तृत पैमाने पर देखा गया है और इसे सामान्य स्थिति में वापस आने में समय लगेगा। हालांकि, अग्रिम चेतावनी, और निकासी सहित सरकार के उत्कृष्ट प्रयासों के कारण मछुआरों की संपत्ति का नुकसान कम हुआ है। जगतसिंहपुर जिले के गांवों में तूफान की तीव्रता कम होने के कारण नुकसान अपेक्षाकृत कम था। टीम ने देखा कि समय पर राहत प्रदान करने में सरकार सहायनीय कार्य कर रही है। मछुआरों को गंभीर रूप से प्रभावित क्षेत्रों में चावल, नकदी, सोलर लाइट और पॉलिथीन शीट दी गई। इसके अलावा, राहत के रूप में सरकार द्वारा गृह निर्माण सहायता भी प्रदान की जाएगी।



"मछुआरों के लिए वैकल्पिक आजीविका विकल्प" पर प्रशिक्षण

क्षेत्रीय केंद्र कोच्चि में 14 जून 2019 को "मछुआरों के लिए वैकल्पिक आजीविका



विकल्प" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। केरल के विभिन्न जिलों से आये तेईस अनुसूचित जाति के मछुआरे (अलप्पुझा (4), कोट्टायम (5), एर्नाकुलम (17) और कोल्लम (1)) ने कार्यक्रम में भाग लिया। क्षेत्रीय केंद्र कोच्चि के प्रभारी अधिकारी डॉ. रानी पलानीस्वामी ने सभी मछुआरों का इस कार्यक्रम में स्वागत किया। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया कि राज्य और केंद्रीय एजेंसियों द्वारा उनके आजीविका सुधार के लिए प्रचारित योजनाओं का उपयोग कैसे किया जा सकता है। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्रीमती माजा जोस, उप निदेशक मत्स्य (प्रशिक्षण), एर्नाकुलम ने किया। उन्होंने कहा कि भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन में नई पहल करने के लिए और

वंचित समुदायों को प्रशिक्षित करने में प्रमुख भूमिका निभा रही है। इस कार्यक्रम में डॉ. दीपा सुधीसन ने अंतर्स्थलीय खुले पानी में मत्स्य पालन प्रणाली और डॉ. टी. टी. पॉल ने मीठे पानी में मछली पालन से मछुआरों के लिए एक वैकल्पिक आजीविका विषयों पर व्याख्यान दिए। भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. दिवू दामोदरन ने *लेड्ड कैल्केफर*, टाइगर प्रॉन और कीचड़ केंकड़ा की पिंजरा पालन पर व्याख्यान दिया, जिसे केरल के बैकवाटर में पालन किया जा सकता है। मछुआरों ने कार्यक्रम और उसके बाद चर्चा में सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम का समन्वयन श्री. एस. मनोहरन, मुख्य तकनीकी अधिकारी और श्रीमती उषा उन्नीथन, तकनीकी अधिकारी ने किया।

नादिया और उत्तर 24 परगना के मछुआरों के आजीविका में सुधार के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

"आद्रभूमि में मात्स्यिकी प्रबंधन और आजीविका सुधार" पर 4-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास, द्वारा 24 जून, 2019 को नादिया और उत्तर 24 परगना के किसानों के लिए किया गया। पश्चिम बंगाल के इन दोनों जिलों में मत्स्य विकास के लिए उपयुक्त बहुत सारी आद्रभूमियां हैं। इस क्षेत्र में लगभग



90 प्रतिशत मछुआरे अनुसूचित जाति के हैं, इसलिए वैज्ञानिक मत्स्य तकनीकों के माध्यम से आजीविका सुधार की दिशा में समाज के इस सीमांत वर्ग को सशक्त और गतिशील बनाने का प्रयास कर रहे हैं।



कार्यक्रम में कुल 21 मछुआरों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान ने आद्रभूमि मत्स्य प्रबंधन के प्रति किसानों के ज्ञान, कौशल और

दृष्टिकोण में अंतर को कम करने का प्रयास किया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने प्रशिक्षुओं को संबोधित किया और गरीबी और कुपोषण को मिटाने के लिए आद्रभूमि मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर मछली किसानों के कौशल विकास की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने मत्स्य पालन में उद्यमशीलता के अवसरों के बारे में भी बताया जो बेहतर विपणन और व्यावसायिक कौशल के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं। उन्होंने प्रशिक्षुओं के साथ बातचीत की और उन्हें उनके द्वारा अर्जित ज्ञान को अभ्यास में लाने को कहा और अपने गाँव वापस जाने के बाद साथी किसानों के बीच प्रशिक्षण सत्रों से एकत्रित ज्ञान का प्रसार करने के लिए भी कहा। प्रशिक्षुओं को लाभान्वित होने के लिए समूह में काम करने के लिए प्रेरित किया गया और इससे उन्हें बेहतर बाजार और संस्थागत जुड़ाव मिलेगा जिससे उनकी आय में वृद्धि होगी। कार्यक्रम में प्रशिक्षण सत्रों में तीन दिन व्याख्यान और साथ में हस्त प्रशिक्षण और क्षेत्र प्रदर्शन कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में आद्रभूमि मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं जैसे जल और मृदा रसायन, घरे में मछली पालन, मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन, आहार और खाद्य प्रबंधन, मत्स्यों के लिए प्राकृतिक खाद्य जीव, नर्सरी प्रबंधन, आद्रभूमि प्रबंधन आदि शामिल हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में अलग-अलग सत्र भी शामिल हैं और साथ ही प्रशिक्षणार्थियों को संस्थान प्रयोगशालाओं, पुनरुत्पादक एकाकल्चर सिस्टम (आरएएस) आदि का दौरा कराया गया और वैज्ञानिक-मछुआरों के बीच विचार विमर्श सत्र भी आयोजन किया गया।

एनएचपीसी के अधिकारियों के साथ मत्स्य सुधार के लिए बैठक

27 जून, 2019 को संस्थान में एनएचपीसी के अधिकारियों के साथ "तीस्ता लो डैम प्रोजेक्ट (TLDP) - तीस्ता नदी पर स्थित III और टीएलडीपी IV" को बेहतर बनाने की दिशा में एक बैठक का आयोजन किया गया था। फिश पास पर चल रही परियोजना के प्रधान अन्वेषक और संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने डैम / बैराज के अप-स्ट्रीम में प्रवासी मछलियों की आबादी में सुधार के लिए मत्स्य मार्ग के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. दास ने मछली की प्रजातियों के लिए भरपूर प्रवाह की आवश्यकता के महत्व को रेखांकित किया। डॉ. ए.के.साहू, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने टीएलडीपी III और टीएलडीपी IV के मत्स्यमार्ग की वर्तमान स्थिति और उपलब्ध प्रवासी मत्स्य प्रजातियों के लिए उनकी प्रभावकारिता को समझाया। डॉ. साहू ने अध्ययन में किए गए टैगिंग



प्रयोग के परिणामों पर प्रकाश डाला। श्री महेश कुमार, महाप्रबंधक, सिविल इंजीनियरिंग (डिजाइन), एनएचपीसी ने मत्स्य मार्ग के डिजाइन पर विचार व्यक्त किए और उसी के डिजाइन के लिए मत्स्य गतिविधि के महत्व को उजागर किया। डॉ. एस. के. बाजपेयी, उप महाप्रबंधक (पर्यावरण), एनएचपीसी ने फिश पास की भूमिका और नदी संपर्क पर इसके महत्व को स्पष्ट किया।

महत्वपूर्ण बैठकें

- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 29-30 मई 2019 को नई दिल्ली में मात्स्यिकी क्षेत्र में जीआईएस डेटाबेस के सुदनीकरण पर 14वीं तकनीकी अनुवीक्षण समिति की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 5 जून 2019 को भुवनेश्वर, ओड़ीशा में चिलिका विकास प्राधिकरण के संयुक्त निदेशक (समुद्री), मात्स्यिकी विभाग, ओड़ीशा सरकार के साथ बैठक में भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 6 जून 2019 को वर्ल्ड फिश- ओड़ीशा के साथ “ओड़ीशा के जलीय तंत्र पर फनी चक्रवात का प्रभाव” विषय पर विचार मंथन किया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 19 से 21 जून 2019 को चेन्नई में आयोजित एशियन पैसिफिक एक्वाकल्चर कांफ्रेंस – 2019 में भाग लिया।



- संस्थान के ने दिनांक 19 जून 2019 को चेन्नई में आयोजित एशियन पैसिफिक एक्वाकल्चर कांफ्रेंस – 2019 के रंगीन मछली पर आधारित सत्र की अध्यक्षता की।

अन्य कार्यकलाप

- संस्थान ने दिनांक 7 जून 2019 को अनुसूचित जाति उप योजना के अंतर्गत जलेश्वर, बालासोर के मछुआरों के लिए एक प्रशिक्षण-सह-जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु में दिनांक 11 से 15 जून 2019 तक राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड द्वारा प्रायोजित “आय उपार्जन हेतु जलाशय मात्स्यिकी प्रबंधन” पर एक पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।
- आत्मा योजना के तहत संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु में दिनांक 19 जून 2019 तमिलनाडू के थिरुवरूर जिले के मछुवारों के लिए एक प्रदर्शनी आयोजित की गयी जिसमें संस्थान के अनुसंधान कार्यकलापों और विकसित प्रौद्योगिकियों को दिखाया गया।
- संस्थान में दिनांक 24-27 जून 2019 को “आईएस/आईएसओ/आईईसी 17025:2017 के अनुसार प्रयोगशाला गुणवत्ता प्रबंधन और आंतरिक लेखा परीक्षा” विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- संस्थान के वैज्ञानिक ने दिनांक 17 जून 2019 को मणिपुर विश्व विद्यालय का दौरा किया जिसमें मानव संसाधन विकास के अंतर्गत संभावित अनुसंधान सहयोग और विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देने संबंधित विषयों पर विचार विमर्श किया गया।

सम्पादक मंडल की तरफ से

इस अंक की प्रस्तुति के साथ ही हमारा इस माह का एक ओर लक्ष्य पूर्ण हो गया है। इस मासिक पत्रिका के माध्यम से संस्थान में हो रहे विभिन्न कार्यों और भावी योजनाओं की कुछ झलकियों को चित्रों और सम्पादकियों द्वारा दर्शाने का प्रयास किया गया है। इस माह संस्थान के निदेशक को राष्ट्रीय कृषि वैज्ञानिक अकादमी की फेलोशिप से सम्मानित किया गया है। जो कि बहुत गर्व की बात है संपादक मण्डल की तरफ से निदेशक महोदय को बहुत बहुत बधाई। संस्थान द्वारा आयोजित फिश हार्वेस्ट मेला का उद्घाटन माननीय पूर्व केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री और संसद सदस्य (लोक सभा) पूर्वी चंपारण श्री राधा मोहन सिंह जी द्वारा किया जाना और संस्थान की तकनीकियों के सराहना से समस्त वैज्ञानिक उत्साहित है।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मोर्य, गणेश चंद्र, राजीव लाल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कासिम फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई-मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN0970-616X

सिफरी मासिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः उत्पन्न नहीं की जा सकती है